माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 2019

20 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी विशिष्ट	0 0 1	हिन्दी

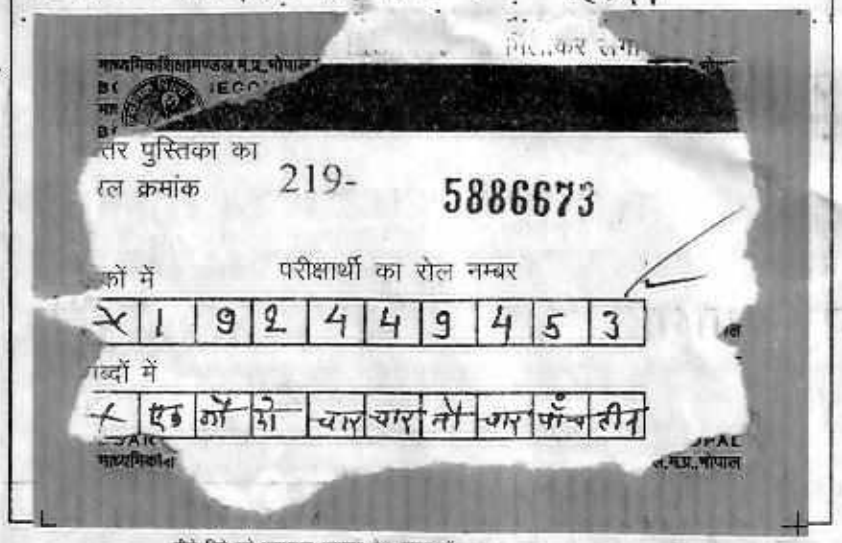

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

[redacted]

तर पुस्तिका का
रल क्रमांक 219- 5886673

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

कों में

X	1	9	2	4	4	9	4	5	3

ब्दों में

X	एक	नौ	दो	चार	चार	नौ	चार	पाँच	तीन

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छ:	आठ

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में —— शब्दों में ——

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 01

ग :– परीक्षा का दिनांक 19 | 03 | 2019

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हाई स्कूल ... परीक्षा C.No.241086

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
A. Ratan 19/03/19	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
M. P. ... 9770501	N.K.BHALEKAR E/77/19/050...

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टि करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

de'smat

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

② $\square$ + $\square$ = $\square$

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (1) का उत्तर

5888672

(i) कृष्ण के
(ii) शहद
(iii) प्रवाजिका आत्मप्राणा
(iv) कृतज्ञ
(v) रति

प्रश्न क्र. (2) का उत्तर

(i) गाँवों में
(ii) महादेवी वर्मा
(iii) माद्री
(iv) सोलह
(v) पंचवटी

E
S
E

प्रश्न क्र. (3) का उत्तर

(i) सत्य
(ii) सत्य
(iii) असत्य
(iv) असत्य
(v) असत्य

3

पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ क्र = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (4) का उत्तर

(i) पद्य की पहचान – हरिवंशरायबच्चन
(ii) श्री कृष्ण – सोलह कलाओं के अवतार
(iii) नर्मदा – अमरकंटक
(iv) संधि को तोड़ना – विच्छेद
(v) संचारी भावों की संख्या – 33

प्रश्न क्र. (5) का उत्तर

(i) जाति
(ii) सम्भाजी
(iii) मार्गरेट एलिजाबेथ नोबुल
(iv) अद्वितीय
(v) वियोग श्रृंगार

प्रश्न क्र. (6) का उत्तर

अवगुणों पर ध्यान न देने के लिए सूरदास ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

प्रश्न क्र. (7) का उत्तर (अथवा)

कवि ने हिमालय की ~~झि~~ झीलों में हंसों को तैरते हुए देखा है।

4

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र.(8) का उत्तर

कवि पद्माकर के अनुसार वनों और बागों में वसंत ऋतु के मनमोहक वातावरण का विस्तार है।

प्रश्न क्र.(9) का उत्तर (अथवा)

बिना ~~बिचारे~~ विचारे, काम करने से व्यक्ति को पछताना पड़ता है। बिना विचारे किये हुए कार्य कभी-कभी बिगड़ जाते हैं और हमें संसार में हँसी का पात्र बनना पड़ता है। कार्य के बिगड़ जाने से हमारा अशांत रहता है।

प्रश्न क्र.(10) का उत्तर (अथवा)

कबीर ईश्वर से माँगते हैं कि हे प्रभु! मुझे इतना अन्न धन दीजिए कि जिससे मेरे परिवार का भरण-पोषण हो सके और मेरे यहाँ आया साधु भी भूखा न जाए।

प्रश्न क्र.(11) का उत्तर (अथवा)

~~हिन्दी की प्रथम कहानी इन्दुमती है तथा इसके लेखक किशोरीलाल गोस्वामी हैं।~~

हिन्दी की प्रथम एकांकी 'एक घूँट' है तथा इसके एकांकीकार जयशंकर प्रसाद हैं।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र.(12) का उत्तर (अथवा)

आधुनिकता एक गतिशील प्रक्रिया है जबकि संप्रदाय स्थिति संरक्षक है। दोनों में अंतर बस इतना है कि आधुनिकता परंपरा क्रम के बीच पड़ा हुआ अंतिम चरण है जबकि आधुनिकता आगे बढ़ा हुआ गतिशील कदम है अतः आधुनिकता और संप्रदाय के बीच घोर विरोध की स्थिति रहती है।

प्रश्न क्र. (13) का उत्तर

कई बार मिथ्या भाषण सत्य से बड़ा हो जाता है। जीवन में धर्म से बड़ी कोई चीज नई नहीं है और यदि धर्म की रक्षा असत्य बोलने से होती है तो वह असत्य सत्य से बड़ा हो जाता है।

प्रश्न क्र.(14) का उत्तर (अथवा)

यक्ष के संसार में सबसे बड़े आश्चर्य संबंधी प्रश्न पर युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि - "कितने ही प्राणियों को मृत्यु के मुँह में जाते देख, बचे हुए प्राणी जो यह चाहते हैं कि हम अमर रहें, यह महान आश्चर्य की बात है"।

प्रश्न क्र.(15) का उत्तर (अथवा)

(i) सेठ ज्वालाप्रसाद अच्छा महाजन थे।
उत्तर ⇒ सेठ ज्वालाप्रसाद अच्छे महाजन थे।

(ii) सोनू को फेल होने की आशा है।
उत्तर ⇒ सोनू को फेल होने की आशंका है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (16) का उत्तर (अथवा)

महाकाव्य ⇒ वह काव्य जिसमें किसी व्यक्ति विशेष के जीवन की समग्र घटनाओं की विशद् व्याख्या होती है उसे महाकाव्य कहते हैं। बृहद् काव्य होने के कारण इसे महाकाव्य कहा जाता है।
महाकाव्य – रामचरित मानस (तुलसीदास)
कामायनी (जयशंकर प्रसाद)

प्रश्न क्र. (17) का उत्तर

वनवास की कठिनाइयों के बीच अर्जुन ने इंद्रदेव से दिव्यास्त्र प्राप्त कर लिया था तथा भीम ने सरोवर के पास हनुमान जी से भेंट कर उनका आलिंगन प्राप्त कर कई गुना शक्तिशाली हो गया था और युधिष्ठिर ने मायावी सरोवर के पास धर्मदेव के दर्शन करके उनसे गले मिलने का सौभाग्य प्राप्त कर लिया था।

प्रश्न क्र. (18) का उत्तर

(i) आँख लगना – नींद लगना, वाक्य प्रयोग ⇒ मोहन ने दिनभर इतना परिश्रम किया कि रात होते ही उसकी आँख लग गई।

प्रश्न क्र.
(ii) नौ दो ग्यारह होना - भाग जाना
वाक्य प्रयोग ⇒ पुलिस को देखते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गए।

(iii) अक्ल का दुश्मन - मूर्ख व्यक्ति
वाक्य प्रयोग ⇒ सोहन एक बार पेड़ की डाली पर बैठकर उसी डाली को काट रहा था, उसे देखते ही लोग उसे अक्ल का दुश्मन कहने लगे।

प्रश्न क्र. (19) का उत्तर (अथवा)

	स्थायी भाव	संचारी भाव
(i)	स्थायी भाव सहृदय के हृदय में अधिक देर तक जागृत रहते हैं।	संचारी भाव सहृदय के हृदय में पानी के बुलबुले के समान शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।
(ii)	प्रत्येक रस का एक निश्चित स्थायी भाव होता है अतः प्रत्येक स्थायी भाव अपने रस के जनक होते हैं।	संचारी भाव एक ही समय में एक से अधिक रसों में प्रवेश कर सकते हैं अतः इन्हें व्यभिचारी भाव भी कहते हैं।
(iii)	स्थायी भावों की संख्या 10 है।	संचारी भावों की संख्या 33 है।
(iv)	उदाहरण - रति, करुणा	उदा. - ग्लानि, शंका

B
S
E

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (२०) का उत्तर

प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएँ

(i) शोषकों के प्रति विद्रोह शोषितों से सहानुभूति - प्रगतिवादी कवियों ने पूँजीवादी शोषकों के प्रति विद्रोह और किसानों व मजदूरों के प्रति सहानुभूति की भावना ~~व्यक्त~~ व्यक्त की है।

(ii) नारी शोषण के विरुद्ध मुक्ति के स्वर - प्रगतिवादी कवियों ~~के~~ ने नारी के शोषण के विरुद्ध मुक्ति के स्वर अभिव्यक्त किये हैं। इन्होंने को उपभोग की वस्तु नहीं समझा वरन उसे सम्मानजनक स्थान दिया है।

प्रगतिवादी कवि - (i) नागार्जुन - युगधारा
(ii) सुमित्रानंदन पंत - युगवाणी, ग्राम्या
(iii) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला - कुकुरमुत्ता

B
S
E

9 | | + | | = | |
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 9 के अंक | कु. अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (२१) का उत्तर

आत्मकथा	जीवनी
(i) आत्मकथा स्वयं के द्वारा लिखी जाती है।	(i) जीवनी किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा लिखी जाती है।
(ii) आत्मकथा में अनुभूति की गहराई होती है।	(ii) जीवनी में विवरण पर ध्यान दिया जाता है।
(iii) ~~आत्मकथा कथात्मक शैली में लिखी जाती है~~	(iii) ~~जीवनी विवरणात्मक वर्णनात्मक शैली में लिखी जाती है।~~
(iv) आत्मकथा मे लेखक अपने जीवन का वर्णन सत्य घटनाओं के आधार पर करता है।	(iv) जीवनी में लेखक अपने चरित्र नायक के जीवन को उभारने का प्रयास करता है।
(v) उदाहरण - मेरी आत्म - कहानी - (आचार्य चतुरसेन)	(v) उदाहरण - आवारा मसीहा (विष्णु प्रभाकर)

रेखाचित्र - रेखाचित्र मूल रूप से चित्रकला का शब्द है। जब लेखक शब्दों के द्वारा किसी विषय या वस्तु का वर्णन इसप्रकार करता है कि उस व्यक्ति अथवा वस्तु का चित्र आँखों के सामने खिंचता चला जाए तो इसे रेखाचित्र कहते हैं। दूसरो शब्दों में - रेखाचित्र इतिहास, वातावरण तथा मनोविज्ञान की सहायता से इच्छित भाव की अनुभूति कराने वाला शब्द चित्र है।

रेखाचित्र ⇒ बनारसी दास चतुर्वेदी - औरंगजेब
महादेवी वर्मा - अतीत के चलचित्र
पद्म सिंह - पद्म पराग

10

पृष्ठ अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (22) का उत्तर

साहित्यिक परिचय – तुलसीदास

(i) दो रचनाएँ – रामचरितमानस, विनयपत्रिका

(ii) भाव पक्ष – तुलसीदास रामभक्त कवि थे। उनके काव्य का विषय था – मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का व्यक्तित्व। राम की कथा के माध्यम से आपने अपने युग की वाणी दी है। राम की कथा के माध्यम से आपने एक आदर्श भाई, आदर्श माता-पिता आदि पर भी मार्मिक साहित्य लिखा। मानस की रचना करके उन्होंने शैव और वैष्णवों के मतभेदों को समाप्त करके उन्हें एकता के सूत्र में बाँधा। सच्चे अर्थों में वे लोकनायक कवि हैं।

(iii) कला पक्ष – तुलसीदास जी ब्रजभाषा और अवधी भाषा के सिद्धहस्त लेखक थे। उनका प्रसिद्ध ग्रंथ रामचरितमानस भी अवधी में लिखा हुआ है। उनकी भाषा में इतनी अधिक सरलता, सुबोधता और आकर्षण है कि रचना के पाँच सौ वर्ष बाद भी वे भारतीय जनमानस के कंठहार बने हुए हैं। उनका काव्य सभी रसों का भण्डार है। इन्होंने अपनी रचनाओं में दोहा-चौपाई छंदों का चयन किया है। सवैया और कवित्त में भी इन्हें सफलता प्राप्त हुई है।

(iv) साहित्य में स्थान – आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार ये सच्चे अर्थों में करुणा के कवि हैं। सगुण ब्रह्म की रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि

प्रश्न क्र.

कवियों में आपका मुख्य स्थान। हिन्दी साहित्य में आपका स्थान सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

प्रश्न क्र॰ (23) का उत्तर

साहित्यिक परिचय - रामवृक्ष बेनीपुरी

(i) दो रचनाएँ - माटी की मूरतें, लालतारा

(ii) भाषा - रामवृक्ष बेनीपुरी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। आपकी भाषा सरल, सुबोध, मुहावरेदार, व्याकरण सम्मत है। आपने विषय व भावों के अनुरूप विभिन्न प्रकार के शब्दों का चयन किया है। आपने अपनी भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, उर्दू के शब्दों का यथोचित प्रयोग किया है। मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में अद्भुत आकर्षण एवं प्रवाह है। आपकी भाषा में इतना आकर्षण एवं प्रवाहमयता है कि पाठक आपको भाषा का सम्राट कहने लगते हैं।

शैली - आपकी शैली के विविध रूप मिलते हैं। आपने विषय व भावों के अनुरूप विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। आपने अपने निबंधों व संस्मरणों में वर्णनात्मक, विवरणात्मक, गवेषणात्मक, परिमार्जित शैलियों का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया है।

(iii) साहित्य में स्थान - भाषा-शैली की इस अद्वितीयता के कारण हिन्दी साहित्य के निबंध व संस्मरण लेखकों में आपका विशिष्ट स्थान है। वास्तव में आप कुशल शब्द-शिल्पी और भाषा के जादूगर हैं।

(12)

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (२५) का उत्तर (अथवा)

भर रही कोकिला ―――― वसंत ?

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक नवनीत के पाठ 'वीरों का कैसा हो वसंत" नामक शीर्षक से लिया गया है। इसकी रचनाकार श्रीमति सुभद्रा कुमारी चौहान हैं।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश में कवियित्री ने वीरों के वसंत के बारे में बतलाया है।

अर्थ - कवियित्री कहती हैं कि एक ओर ~~कोकिलो~~ कोकिला (कोयल) तान भर रही है तथा दूसरे ओर ओर मारू बाजे का गम हो। एक ओर सांसारिक सुख-सुविधायें हों तथा दूसरी ओर रण भूमि हो और आदि और अंत मिलने आये हों तब वीरों को इसका निर्धारण स्वयं करना है कि उनका वसंत कैसा हो?

काव्य सौन्दर्य - (i) भाषा शुद्ध, साहित्यिक खड़ी बोली है। (ii) भाषा स्पष्ट, सरल और बोधगम्य

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (25) का उत्तर (अथवा)

शास्त्रों में ____ बड़ा हो जाता है।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक नवनीत के पाठ सच्चा धर्म से लिया गया है। इसके लेखक सेठ गोविन्ददास जी हैं।

प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश में सत्य और असत्य की व्याख्या की गई है।

व्याख्या - लेखक कहता है कि शास्त्रों में सत्य और असत्य की बड़ी बारीकी से व्याख्या की गई है। शास्त्रों में लिखा है कि कई बार सत्य के स्थान पर मिथ्या (असत्य) भाषण, सत्य से भी बड़ी वस्तु होती है। जीवन में धर्म से बड़ी कोई वस्तु नहीं होती और यदि धर्म की रक्षा असत्य बोलने से होती है तो वह असत्य सत्य से बड़ा हो जाता है।

विशेष - (i) भाषा सहज और सरल है।
(ii) सत्य और असत्य की व्याख्या हेतु शास्त्रों का उदाहरण दिया गया है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (26) का उत्तर

(i) शीर्षक – परोपकार

(ii) पर के लिए सर्वस्व बलिदान करना ही सच्ची मानवता है।

(iii) वृक्ष मनुष्यों को छाया तथा फल देने के लिए धूप, आंधी, वर्षा और तूफानों में अपना सब कुछ बलिदान कर देते हैं इस प्रकार वृक्ष हमें परोपकार का संदेश देते हैं।

(iv) सारांश – स्वार्थ और परमार्थ मानव की दो प्रवृत्तियाँ होती हैं। हम अपने सभी कार्य स्वयं के लिए अर्थात् स्वार्थ के लिए करते हैं। परन्तु सच्ची मानवता हमें पर के लिए बलिदान का संदेश देती है इसे ही परोपकार कहते हैं। प्रकृति, नदी और वृक्ष हमें निरंतर परोपकार का संदेश देते हैं।

15

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ   कुल

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र.(27) का उत्तर

~~प्रति,~~
~~श्रीमान् जिलाधीश महोदय~~
~~जिला सागर (म.प्र.)~~
~~विषय:- ध्वनि-विस्तारक~~

प्रति,
मान् जिलाधीश महोदय
जिला सागर (म.प्र.)
विषय- ध्वनि-विस्तारक यंत्रों के बजाने पर रोक लगाने बावत।
महोदय,
निवेदन है कि हमारे मोहल्ले शिवाजी वार्ड क्र.01 में ध्वनि-विस्तारक यंत्रों का बेरोकटोक उपयोग हो ~~मक~~ रहा है। हमारी बोर्ड परीक्षाएं 01 मार्च से प्रारंभ होने जा रहीं हैं, जिसके कारण सभी छात्र अध्ययन में जुटे हुए हैं। परंतु ध्वनि-विस्तारक यंत्रों के अनियंत्रित प्रयोग के कारण छात्रों के अध्ययन में व्यवधान उत्पन्न हो रहा है।
अतः आपसे सानुरोध है कि परीक्षाकाल के 1 माह पूर्व से ही ध्वनि-विस्तारक यंत्रों के प्रयोग पर रोक लगाने हेतु आदेश प्रसारित करने का कष्ट करें। मैं सदैव आपका आभारी रहूँगा।
धन्यवाद

दिनाँक
01/02/2019

प्रार्थी
अ.ब.स.
शिवाजी वार्ड

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० (28) का उत्तर

(ब) रूपरेखा –

(ii) आतंकवाद

(1) प्रस्तावना
(2) आतंकवाद से आशय
(3) आतंकवाद के उदय का कारण
(4) आतंकवाद का विश्व पर प्रभाव
(5) आतंकवाद के दुष्परिणाम
(6) आतंकवाद से निपटने का उपाय
(7) निष्कर्ष

B
S
E

~~ब~~ (अ) (iv) विज्ञान के बढ़ते चरण

(1) प्रस्तावना
(2) विज्ञान का दैनिक जीवन में योगदान / विज्ञान के बढ़ते चर
(3) विद्युत
(4) आवागमन के क्षेत्र में
(5) कृषि के क्षेत्र में
(6) परमाणु ऊर्जा
(7) मनोरंजन एवं शिक्षा के क्षेत्र में
(8) ~~विज्ञान से अभिशाप~~ अंतरिक्ष में विज्ञान
(9) चिकित्सा के क्षेत्र में
(10) विज्ञान के अभिशाप
(11) निष्कर्ष

"यह समय विज्ञान का सब भाँति पूर्ण समर्थ
खुल गए हैं गूढ़ संकृति के अमित गुरु अर्थ
चीरता तमन संभाले बुद्धि की पतवार आज
आ गया है नव ज्योति की नवभूमि में संसार"

(1) प्रस्तावना - आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने मानव के हाथों में असीम शक्ति दे दी है जिसके कारण वह प्रकृति की शक्तियों को चुनौती दे रहा है। मानव जल, थल और नभ में अपनी विजय पताका फहरा चुका है। वह सागर की गहराईयों को नाप चुका है, पर्वतों को लाँघ चुका है। अब तो उसके चरण चंद्रमा पर भी अंकित हो चुके हैं।

आज विज्ञान के विस्मयकारी आविष्कार तीव्र गति से हो रहे हैं। विज्ञान ने सभ्यता के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विज्ञान ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी ~~परिवर्तक~~ परिवर्तन उपस्थित कर दिया है। यदि हमारे पूर्वज आज की बहुरंगी दुनिया देखें तो आश्चर्यचकित रह जाएँगे।

(2) विज्ञान के बढ़ते चरण - विज्ञान से हमारे जीवन का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। विज्ञान ने हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित कर दिया है। विज्ञान ने संसार की काया पलट दी है।

(3) विद्युत - विद्युत विज्ञान की महान खोजों में से एक है इसने हमारे जीवन को आरामदायक बना दिया है। इसकी सहायता से हम कुछ ही समय में भोजन पका सकते हैं तथा कपड़े धो सकते हैं। आज का जीवन विद्युत के बिना असंभव है।

प्रश्न क्र. (4) आवागमन के क्षेत्र में – विज्ञान में आवागमन मे क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित कर दिया है। इसकी सहायता से हम दिल्ली में नाश्ता तो कोलकाता में भोजन तथा मुंबई में शयन कर सकते हैं। सागर की छाती को चीरते जहाज, वायु मे उड़ते विमान विज्ञान की ही देन है। विज्ञान ने इस संसार को घर आँगन सा बना दिया है।

(5) कृषि के क्षेत्र में – विज्ञान ने कृषि के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वैज्ञानिकों ने ट्रैक्टर, कीटनाशक औषधियों, विभिन्न उपकरणों का आविष्कार किया है जिससे कृषि का उत्पादन कई गुना बढ़ गया है। हरित क्रांति व श्वेत क्रांति ने कृषि के क्षेत्र में विकास की नई पहल की है।

(6) परमाणु ऊर्जा – परमाणु ऊर्जा का सृजन और विनाश दोनों ही प्रकार से उपयोग किया जा रहा है। एक ओर इससे अस्त्र-शस्त्र बनाए जा रहे हैं तो दूसरी ओर इसका उपयोग पर्वत काटने, विद्युत उत्पादन में भी किया जा रहा है।

(7) मनोरंजन एवं शिक्षा के क्षेत्र में – रेडियो, सिनेमा, टी.वी. व समाचार पत्रों के माध्यम हम मनोरंजनार्थ प्रस्तुत की जाने वाली सामग्री देख, पढ़ व सुन सकते हैं जो कि विज्ञान की ही देन है। यह हमारी शिक्षा, संस्कृति और आचार-विचार को प्रभावित करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र मे भी विज्ञान ने अपना अपूर्व योगदान दिया है। कंप्यूटर विज्ञान की ही देन है

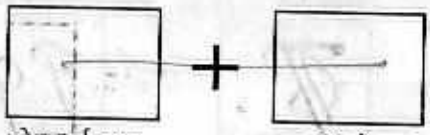

प्रश्न क्र.

जो शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है।

(8) अंतरिक्ष में विज्ञान - विज्ञान ने अंतरिक्ष के ग्रह नक्षत्रों को भी अछूता नहीं छोड़ा है। आज का मानव अंतरिक्ष में पृथ्वी की भाँति विहार कर रहा है। चंद्रमा पर उसके चरण चिन्ह अंकित हो चुके हैं, अब उसकी अन्य ग्रहों पर भी नजर लगी हुई है। वह दिन दूर नहीं है जब मानव अंतरिक्ष में भी अपनी विजय पताका फहरायेगा। रूस व अमेरिका के वैज्ञानिकों ने तो विभिन्न उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित कर अपनी श्रेष्ठता प्रतिपादित कर दी है।

(9) चिकित्सा के क्षेत्र में - विज्ञान ने असाध्य समझे जाने वाले रोगों पर विजय प्राप्त कर ली है। अब ऐसी औषधियों की खोज हो चुकी है जिन्होंने मृत्यु के मुह से भी मानव को बचा लिया। अल्ट्रासोनोग्राफी, एक्स-रे द्वारा हानिकारक रोगों का पता लगा लिया जाता है। विभिन्न प्रकार के रोगों जैसे मलेरिया, कैंसर, हैजा, डायबिटीज को भी विज्ञान की सहायता से नियंत्रित कर लिया गया है। वास्तव में विज्ञान ने अंधे को आँखे, बहरे को कान और पंगु को चलने की शक्ति दी है।

(10) विज्ञान के अभिशाप - विज्ञान ने जिस प्रकार से मानव को लाभान्वित किया है उसी प्रकार से उसका अहित भी किया है। हाइड्रोजन बम और परमाणु बम विज्ञान की ही देन है। इनके द्वारा देखते ही देखते लाखों लोगों को मौत के घाट उतारा जा सकता है। हिरोसिमा और नागासाकी में तो हम अणुबम का

प्रश्न क्र.

दुष्परिणाम देख ही चुके हैं। विगत वर्षों में बहुराष्ट्रीय सेनाओं ने इनका खुलकर प्रयोग किया है जिससे मानवता के लिए खतरा निरंतर बढ़ रहा है।

"भला बुरा न कोई रूप से कहलाता है
दृष्टि भेद स्वयं दोष गुण दिखलाता है
कोई कमल की कली देखता है कीचड़ में
किसी को चाँद में भी दाग नजर आता है"

(11) निष्कर्ष – विज्ञान स्वयं में न अच्छा है और न बुरा। यदि इसका प्रयोग सृजन के लिए किया जाए तो इस धरती पर स्वर्ग उतारा जा सकता है परंतु यदि विनाश के लिए इसका उपयोग किया जाए तो यह मानव जाति के लिए खतरा बन सकता है। दोष है तो वह है मानव की दृष्टि और उसकी आकांक्षाओं में जो विज्ञान को विनाश की ओर अग्रसर कर रही है अतः हमें प्रयास करना चाहिए कि विज्ञान सृजन का साधन बने।

"विज्ञान मानवता के लिए एक बड़ा उपहार है हमें इसे बिगाड़ना नहीं चाहिए"।

– अब्दुल कलाम